

Course	: B.Ed., Part-II
Paper	: XVI (Pedagogy of Biological Science)
Prepared by	: Dr. Sangeeta Kumari
Topic	: पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त (Principles of Curriculum Construction)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्रशिक्षक:

- क्रियाशीलता के सिद्धान्त से अवगत हो सकेंगे,
 - उपयोगिता के सिद्धान्त की व्याख्या कर सकेंगे,
 - लचीलापन के सिद्धान्त को जान सकेंगे,
 - अनुभवों की पूर्णता के सिद्धान्त से अवगत हो सकेंगे,
 - पाठ्यचर्या निर्माण के सभी सिद्धान्तों से अवगत हो सकेंगे।
- उपर्युक्त तथ्यों से अवगत कराना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

पाठ्यचर्या के अन्तर्गत कक्षा में किए गए कार्यकलाप और प्रयोगशाला में किया कार्य, खेल के मैदान के अनुभव, अध्यापकों और सहपाठियों के साथ क्रियाकलाप, अंतर्विद्यालय और अंतर्कक्षा में किए गए शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्रियाकलाप सभी शामिल हैं। प्रस्तुत इकाई इस पाठ की दूसरी इकाई है। इस इकाई में निर्माण के सिद्धान्त की चर्चा की गई है।

2.2 पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त (Principles of Curriculum Construction)

शिक्षा तीन ध्रुवों वाली प्रक्रिया है। इसमें एक ओर शिक्षक, दूसरी ओर छात्र एवं तीसरी ओर पाठ्यचर्या होता है। वास्तव में पाठ्यचर्या वह साधन है जो शैक्षिक प्रक्रिया के लिए आधार बनता है। बच्चे वे व्यक्ति हैं जिन्हें अपनी बौद्धिक और शारीरिक योग्यताएँ तथा सामर्थ्य हैं। पाठ्यचर्या बनाते समय उनकी आवश्यकता और विकास के प्रत्येक पक्ष का ध्यान रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त हम एक विकासशील राष्ट्र में रह रहे हैं जिनकी अपनी वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के लिए अपेक्षाएँ हैं। पाठ्यचर्या का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष विषय-वस्तु है जिसके माध्यम से बालक और समाज की यह आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

पाठ्यचर्या निर्माण के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं:-

1. **उपयोगिता का सिद्धान्त (Principle of Utility):** पाठ्यचर्या के अन्तर्गत उन क्रियाओं, तथा विषयों को स्थान मिलना चाहिए जो बालक के वर्तमान तथा भावी जीवन के लिए उपयोगी हैं। दूसरे शब्दों में जो क्रियाएँ तथा विषय बालक के वर्तमान तथा भावी जीवन के लिए उपयोगी नहीं हैं, उन्हें पाठ्यचर्या में सम्मिलित नहीं करना

चाहिए। विज्ञान हमारे जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी विषय है। अतः विज्ञान के पाठ्यचर्या में हमारे उपयोग में आने वाले प्रकरणों को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। इसके साथ-साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विज्ञान विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों को विकसित करने में सहायता प्रदान करता है और जीवन में परिस्थितियों और चुनौतियों का सफलता के साथ सामना करने में भी हमें सक्षम बनाता है। इसलिए विज्ञान के पाठ्यचर्या में उपयोगिता का सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करता है। पाठ्यचर्या की पाठ्यवस्तु व्यक्तिगत एवं सामाजिक दृष्टि से जीवनोपयोगी होनी चाहिए। उपयोगिता के अन्तर्गत जीविकोपार्जन का उद्देश्य भी सम्मिलित है।

2. क्रियाशीलता का सिद्धान्त (Principle of Activity): इस सिद्धान्त के अनुसार बालकों को विज्ञान का विषय नीरस तथा कठिन मालूम नहीं होता। वह विज्ञान के अध्ययन में वास्तविक आनन्द का अनुभव करते हैं। उनको केवल यात्रिक रूप से ही विज्ञान के सिद्धान्तों तथा नियमों को स्मरण नहीं करना पड़ता बल्कि मानसिक तथा शारीरिक रूप से क्रियाशील रहने के कारण वे थोड़े ही समय में विज्ञान के कठिन तथ्यों का स्थायी ज्ञान बहुत ही सुविधा से ग्रहण कर लेते हैं। बालक अध्यापक द्वारा बताई गई बातों को बिना सोचे-समझे ग्रहण नहीं कर लेता, वरन् वह अपनी तर्क, विवेचना एवं कल्पना शक्ति का भी प्रयोग करता है। अतः पाठ्यचर्या में कुछ ऐसी समस्याएँ रखनी चाहिए जिनसे विद्यार्थियों को क्रियाशील रहने का अवसर मिले तथा वे स्वयं के अनुभवों के आधार पर इस विषय का सरलता से अध्ययन कर सकें।

3. प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित (Principle based on democratic values): हमारे देश में शासन का स्वरूप प्रजातांत्रिक है। अतः, पाठ्यचर्या के अन्तर्गत ऐसी क्रियाओं को स्थान मिलना चाहिए जिनके द्वारा बालकों का विकास जनतन्त्रीय भावनाओं, मूल्यों एवं दृष्टिकोणों का विकास हो सके। इसके अलावा एक-दूसरे का सम्मान की भावना, समूह स्तर पर कार्य का सम्पादन, कार्य एवं दायित्व में संतुलन, समस्याओं की भावना, सामाजिक चेतना का ज्ञान, तथा विस्तृत विचारधारा को पाठ्यचर्या में शामिल करना चाहिए।

4. अग्रदर्शिता का सिद्धान्त (Principle of Forward Looking): पाठ्यचर्या के अन्तर्गत उन क्रियाओं, वस्तुओं तथा विषयों को स्थान मिलना चाहिए जिसके द्वारा बालक को उसके भावी जीवन में आने वाली परिस्थितियों का ज्ञान हो जाए तथा वह उनके साथ अनुकूलन भी कर ले। दूसरे शब्दों में सीखा हुआ ज्ञान ऐसा होना चाहिए जो बालक को अनुकूलन तथा आवश्यकता पड़ने पर परिस्थितियों में परिवर्तन करने योग्य बना दे। पाठ्यचर्या में हमें केवल उन्हीं प्रकरणों को सम्मिलित नहीं करना चाहिए जो विद्यार्थियों की दैनिक एवं वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हो वरन् अन्य प्रकरणों, जिनके द्वारा विद्यार्थी का भविष्य भी अग्रसर हो एवं अमिष्ट लक्ष्य को प्राप्त कराने में सहायक सिद्ध हो सके, को भी पाठ्यचर्या में सम्मिलित करना चाहिए।

5. अवकाश के क्षणों के सदुपयोग का सिद्धान्त (Principles of Training for Leisure): वर्तमान युग में अवकाश काल का सदुपयोग करना एक महान समस्या है। विद्यार्थी प्रायः अपने खाली समय को बेकार की बातों में नष्ट कर देते हैं। अवकाश के समय का सदुपयोग न होने के कारण वे कभी-कभी अनुशासनहीनता के भी शिकार हो जाते हैं। अतः, विज्ञान के पाठ्यचर्या में कुछ ऐसे में रुचि उत्पन्न हो और वे अवकाश के समय में इसका अध्ययन करके आनन्द प्राप्त कर सकें। पाठ्यचर्या इतना व्यापक होना चाहिए कि जहाँ एक ओर बालकों को काम करने की प्रेरणा दे वहीं दूसरी ओर वह उनमें ऐसी क्षमताएँ भी उत्पन्न करें कि वे अपने अवकाश काल का सदुपयोग करना सीख जाए।

6. छात्र-केन्द्रित सिद्धान्त (Principle of Child-Centred): पाठ्यचर्या बाल केन्द्रित होना चाहिए। दूसरे शब्दों में पाठ्यचर्या का निर्माण करते समय बालकों की रुचियों, आवश्यकताओं, मनोवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं, बुद्धि एवं आयु आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

7. खेल और कार्य की क्रियाओं के अन्तःसंबंध का सिद्धान्त (Principle of Interrelation of Play and Work Activities): पाठ्यचर्या तैयार करते समय ज्ञान प्राप्त करने की क्रियाओं को इतना रुचिकर बनाने का प्रयास करना चाहिए कि बालक ज्ञान को खेल समझकर प्रभावशाली ढंग से ग्रहण कर लें। क्रो एण्ड क्रो के अनुसार— "जो लोग सीखने की प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं, उनका उद्देश्य यह होना चाहिए कि वे ज्ञानात्मक क्रियाओं की ऐसी योजना बनाएँ, जिसमें खेल के दृष्टिकोण को स्थान प्राप्त हो।"

8. **सामाजिक आदर्शों का सिद्धान्त (Principle of Social Orientation):** पाठ्यचर्या का निर्माण समाज के स्वीकृत आदर्शों एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। समाज की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुकूल सामाजिक भावना उत्पन्न करने के लिए पाठ्यचर्या बहुत महत्वपूर्ण होता है। विज्ञान के पाठ्यचर्या में ऐसे प्रकरण रखने चाहिए जिनके द्वारा बालक को विभिन्न प्रकार की विज्ञान सम्बन्धी सामाजिक समस्याओं को हल करने का अवसर मिल सके। विज्ञान शिक्षण से बालकों में सामाजिकता की भावना का विकास अवश्य होना चाहिए जिससे वे समाज की समस्याओं को हल कर सकें तथा समाज के साथ ही साथ उन्नति भी कर सकें।

9. **स्थानीय परिस्थितियों से सम्बन्धित करने का सिद्धान्त (Principle of Local Determination):** पाठ्यचर्या में ऐसी वस्तुओं, क्रियाओं तथा विषयों को स्थान होना चाहिए जो बालकों को मानव जाति के विभिन्न अनुभवों से अवगत करा सकें। इन अनुभवों को प्राप्त कर लेने से वह विभिन्न जातियों के जीवन में भाग लेने के लिए स्वयं को भली प्रकार से तैयार कर लेता है। पाठ्यचर्या व्यक्तिगत विभिन्नताओं एवं स्थानीय परिस्थितियों से विशेष रूप से नियंत्रित रहता है। पाठ्यचर्या का निर्माण करते समय हमें सम्पूर्ण राष्ट्र की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। एक ही प्रकार के पाठ्यचर्या पूरे देश में लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि एक स्थान दूसरे स्थान से संस्कृति एवं अन्य संदर्भों में पर्याप्त रूप से भिन्न होता है।

10. **विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धान्त (Principle of Variety and Elasticity):** इस सिद्धान्त के अनुसार बालक को बालक ही समझना चाहिए। हमें अपना विचार उस पर नहीं थोपना चाहिए। बालक का अपना अलग ही व्यक्तित्व होता है। बालक को केन्द्र मानकर जो पाठ्यचर्या बनाया जाएगा वह कभी कठिन नहीं होगा वरन् उसके लिए उपयोगी ही सिद्ध होगा। अध्यापक को अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए बालक की विशिष्ट मानसिक सामर्थ्य, शक्तियों एवं क्रियाओं को जानना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त पाठ्यचर्या में दृढ़ता न होकर लचीलापन होना चाहिए। परिस्थिति, काल, समय के अनुसार उसमें समय-समय पर परिवर्तन करते रहना चाहिए। लचीला पाठ्यचर्या ही बालक तथा समाज की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है।

11. **अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त (Principle of the Totality of Experiences):** पाठ्यचर्या के अन्तर्गत मानव जाति के अनुभवों की पूर्णता निहित होनी चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि पाठ्यचर्या में परंपरागत ढंग से पढाए जाने वाले सैद्धान्तिक विषयों के साथ-साथ उन सभी अनुभवों को भी स्थान दिया जाना चाहिए जिनको बालक विभिन्न क्रियाओं द्वारा प्राप्त करता है। ये क्रियाएँ विद्यालय, खेल के मैदान, कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला, पुस्तकालय तथा छात्रों एवं शिक्षकों के अनौपचारिक सम्पर्कों में निरन्तर गतिशील रहती हैं।

12. **स्वस्थ आचरण के आदर्शों की प्राप्ति का सिद्धान्त (Principle of Achievement of Wholesome Behaviour Patterns):** बालक के सामाजिकरण तथा सफल एवं व्यवहारकुशल भावी जीवन के लिए उसमें उत्तम आचरण का विकास करना आवश्यक होता है। अतः, पाठ्यचर्या में उन क्रियाओं, वस्तुओं तथा विषयों के स्थान मिलना चाहिए जिनके द्वारा बालक दूसरों के साथ प्रशंसनीय व्यवहार करना सीख जाएँ।

13. **जीवन सम्बन्धी क्रियाओं के समावेशन का सिद्धान्त (Principle of Inclusion of all Life Activities):** स्पेन्सर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य जीवन को पूर्णता प्रदान करना है। अतः, पाठ्यचर्या में जीवन से संबंधित उन सभी क्रियाओं को स्थान मिलना चाहिए जिनसे बालक का शारीरिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा नैतिक विकास हो सके।

2.3 सारांश (Summary)

अधिगम शिक्षण का कार्यक्रम मूलतः पाठ्यचर्या पर निर्भर करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक निश्चित मार्ग की आवश्यकता है। मार्ग न होने पर लक्ष्य पहुँच के बाहर होगा। पाठ्यचर्या शिक्षक व छात्र को एक निश्चित मार्ग प्रदान करता है। वास्तव में पाठ्यचर्या वह साधन है जो शैक्षिक प्रक्रिया के लिए आधार बनता है।

पाठ्यचर्या निर्माण के बहुत सारे सिद्धान्त हैं जिनमें कुछ प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं:- उपयोगिता का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सिद्धान्त, प्रजातांत्रिक मूल्यों का समाहित करने का सिद्धान्त, अग्रदर्शिता का सिद्धान्त,

अवकाश के क्षणों के सदुपयोग का सिद्धान्त, छात्र केन्द्रित सिद्धान्त, खेल और कार्य की क्रियाओं के अन्तर का सिद्धान्त, सामाजिक आदर्शों का सिद्धान्त, स्थानीय परिस्थितियों से सम्बन्धित करने का सिद्धान्त, विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धान्त, अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त, स्वस्थ आचरण के आदर्शों की प्राप्ति का सिद्धान्त, जीवन सम्बन्धी समस्त क्रियाओं के समावेश का सिद्धान्त आदि।

2.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्तों का वर्णन करे।
Describe the principles of curriculum construction.
2. पाठ्यचर्या निर्माण के किन्हीं तीन सिद्धान्तों का वर्णन करे।
Describe any three principles of curriculum construction.

2.5 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1. Das, R.C., (1985) Science Teaching in Schools, Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.
2. Thrubes & Cullette; Teaching Science in Today's Secondary School.
3. David, M. Byrd & others, (1994); Methods for Effective Teaching, Allyn & Bacon.
4. Vaidya N. (1976); The Impact of Science Teaching, Oxford & IBH Publishing Company.

